Jansatta

Environment ke anukool hai Shishe ke saman

Date: 15/05/2012 | Edition: Delhi | Page: 3 | Source: Bureau | Clip size (cm): W: 8 H: 13

India Media Monitor

'पर्यावरण के अनुकूल हैं शीशे के सामान'

नई दिल्ली, 14 मई (जनसत्ता)। प्लास्टिक की अपेक्षा कांच के बने सामान मसलन बोतलें आदि पर्यावरण के नजरिए से ज्यादा अनुकूल हैं। लेकिन भारत में यूरोप के अन्य देशों की तुलना में इनका उपयोग काफी कम है। सरकार के पास इस संबंध कोई साफ नीति भी नहीं है। सोमवार को नई दिल्ली में ऑल इंडिया ग्लास मैगनिफेक्चर फेडरेशन की जारी रपट में सरकार और समाज से जुड़े कई चौकाने वाले तथ्य उजागर हुए।

'लाइफ साइकिल एनालिसिस (एलसीए)' शीर्षक से जारी रपट के मुताबिक ग्लास इंडस्ट्रीज में एनएनपीबी तकनीक का उपयोग बढ़ाकर और हल्का व पतला शीशा ढालने की व्यवस्था कर कीमतें घटाने, बोतलों के दोबारा उपयोग करने और खराब बोतलों व शीशे के दूसरे सामानों का दोबारा निर्माण करने की व्यवस्था करने का सुझाव दिया गया। दिल्ली में जर्मनी की ईकाई पीई इंटरनेशनल की अगुआई में जारी रपट में कहा गया है कि यूरोप के देशों में 80 से 90 फीसद तक शीशे के बोतलों आदि का उपयोग होता है। उपभोक्ता से कबाड़ी या दूसके चेन के जरिए बोतलें आदि दोबारा कंपनी में पहुंचती हैं। उन्हें फिर से उपयोग में लाई जाती है। जबकि भारत में ऐसा केवल 35 फीसद मामलों तक ही हो पाता है।

रपट जारी करने वालों में प्रो. डा. मिथास फिन्कबेगर एआईजीएमएफ के अध्यक्ष मुकुल सोमानी सीआईआई की कार्यकारी निदेशक सीमा अरोड़ा आदि मौजूद थे। उन्होंने कहा कि आगामी तीन सालों में एनएनपीबी तकनीक के बहुतायत उपयोग, दोबारा उपयोग और रि-साइक्लिंग बढ़ाने के लिए सरकार और सामाजिक स्तर पर जागरूकता लानी रहेगी। इसे लेकर अगले साल मार्च में मुंबई में 'ग्लासपेक्स इंडिया' नाम से समारोह का आयोजन किया जाना है।